Dr. V. E. Dongaonkar

Souvenir

ISSN 0977 - 0278

UGC Sponsored

Two Day Interdisciplinary International Buddhist Conference

on

RELEVANCE OF BUDDHISM IN PRESENT ERA

11th & 12th March, 2001

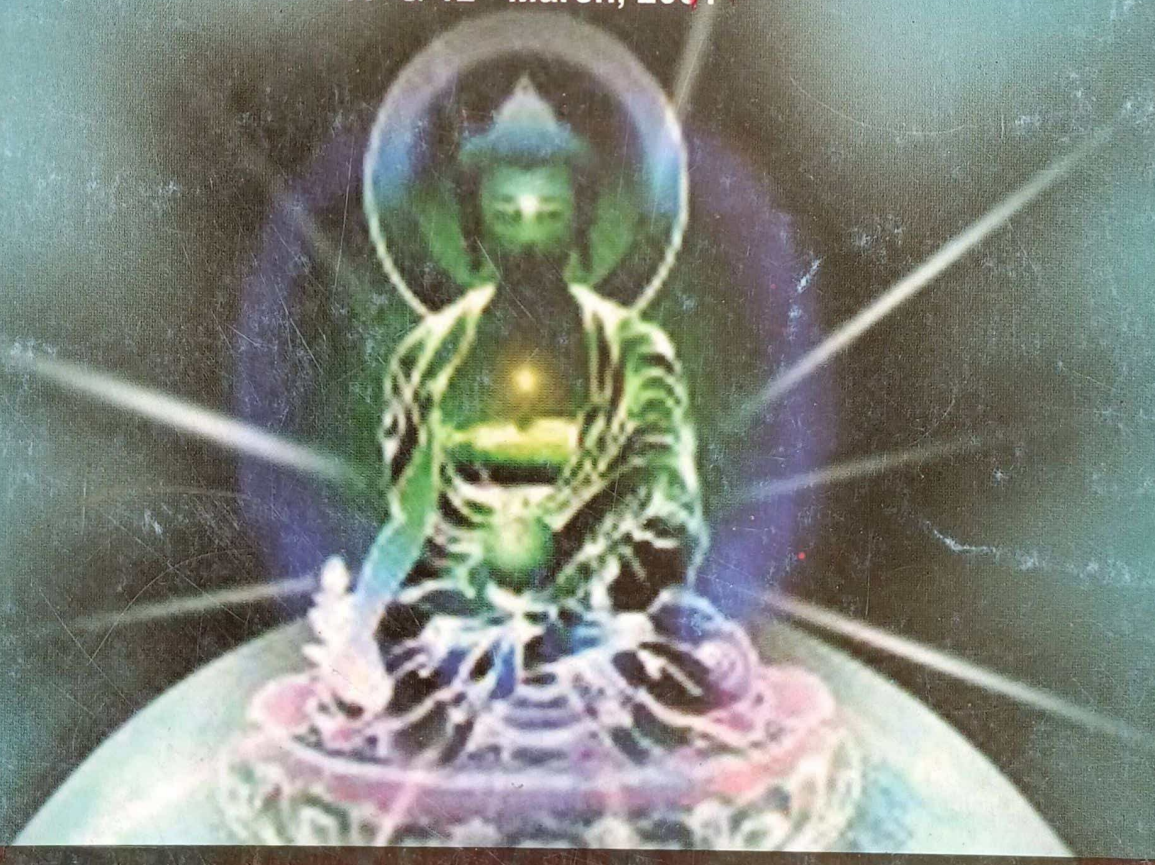

- Organized by -

BUDDHIST STUDIES CENTER

Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur,

Tq. Daryapur, Dist. Amravati - 444 814 Maharashtra (India)

- UGC Sponsored Buddhist Study Centre, Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur Organized, Two- day Interdiciplinary International Buddhist Confernece on

Relevance of Buddhism In Present Era

- **ISSN - 0977- 0278**
- **Owner**
  Secretory, Shri. Dadasaheb Gawai Charitable Trust, Amravati.
- **Published by**
  Shri. Dadasaheb Gawai Charitable Trust, Amravati.
- **Printed by**
  Shrikrupa Printers & Stationers
  Rathi Hostel, Rathi Nagar, Amravati. Mob. 9370663034
- **Pattern**
  Dr. Sau. Kamaltai R. Gawai

- **Advisory Board (Buddhist Study Centre)**
  Dr. S. B. Bhagat, President
  Dr. B. P. Adhau, Secretory
  Miss. Rajani B. Gedam, Director
  Dr. B. R. Waghmare, Member
  Dr. V. H. Chorpagar, Member
  Dr. Pratibha Bhorjar, Member
  Miss. Rekha Wankhade, Member
  Mr. Gangadhar Pande, Member
- **Chief Editor**
  Dr. B. P. Adhau
- **Associate Editors (Confernece Edition)**
  Dr. S. B. Bhagat,
  Principal, Ramkrushna Mahavidyalaya, Darapur, Tq. Daryapur, Distt. Amravati.
  Mr. Y. V. Harne
- **Board of Editors (Confernece Edition)**
  Miss. R. B. Gedam
  Mr. P. L. Ambhore
  Mr. G. W. Mahulkar
  Miss. S. S. Bodade
  Mr. P. W. Maske
  Mr. A. B. Bhagat
  Mr. C. S. Ingole

- **Cover page Design**
  Mr. Ashish C. Deshmukh
- **Type - Setting**
  Mr. Surendra M. Deshmukh
  Mr. Adesh D. Gawande
- **Date of Publication**
  Friday, 11th March, 2011

*Note : The Souvenir is for private distribution only.

*N.B. The Board of Editors may or may not be agree with the thoughts mentioned by individual writer in the souvenir. The concerning writer will be responsible in case of authenticity of his paper.

© All the rights are reserved by the Publication

१७९.	बौद्ध धर्म : वर्तमान युग का बुनियादी सरोकार *डॉ. तीर्थराज राय*	339
१८०.	भगवान बुध्द के परा-प्राकृतिक, ईश्वर और आत्मा सम्बधी विचार *प्रा. विष्णु रायभान पडवाल*	340
१८१.	बुध्द का विश्वशांती संदेश और भारत का संविधान *प्रा. संजय काळे /प्रा. सचिन उके*	342
१८२.	वर्तमान काल में बुद्धिझम की प्रासंगिकता *प्रा. सूर्यकांत माधवराव सांभाळकर/प्रा. संजय माधवराव सांभाळकर*	344
१८३.	नारी सशक्तीकरण में बौद्ध धर्म का योगदान *प्रा. सुरेश ल. पंडित/प्रा. राहुल पं. घुगे/प्रा. संतोष एस. मिसाळ*	346
१८४.	बुद्धीझम और लोकशाही मुल्य *प्रा. किशोर उत्तमराव राऊत*	348
१८५.	बुध्द विचारधारा : आतंकवाद पर एक उपाय *प्रा. एन.जी. सोनुले/एल.जी. सोनुले*	350
१८६.	आधुनिक नारी और बौध्द धम्म *प्रा. अनिता एन. सोनुले/प्रा.डॉ.सविता कांबळे*	352
१८७.	महिला सशक्तीकरण में बौध्द धम्मका योगदान *प्रा. डॉ. रश्मी प्रविण गजरे*	354
१८८.	बौध्द दर्शन में 'विज्ञान' वाद *प्रा. डॉ. वेदप्रकाश ई. डोणगांवकर*	355
१८९.	बुध्द दर्शन : प्रजातंत्र के मुल्य *प्रा. दिपक राघोजी दामोदर*	357
१९०.	नारी मुक्ती संग्राम के आदर्श : सिध्दार्थ गौतम बुध्द *प्रा. डॉ. सौ. विलीमा राऊत (कोहळे)*	359
१९१.	बुध्द धम्म के तत्वज्ञान में ही स्त्रियों की उन्नति *प्रा. अनिल सी. बाभळे*	362
१९२.	बुद्धवाद : आदर्श जीवन प्रणाली *प्रा. संतोष खंडारे*	363
१९३.	वैज्ञानिक दृष्टीकोन तथा बौद्ध तत्वज्ञान *प्रा.वनिता भोपत (केतकर)*	365
१९४.	बुध्द धम्म में बुध्दीवाद *सुधिर एस.मुळे*	366
१९५.	सत्य से मानसिक शांती, मानसिक शांतीसे वैश्विक शांती - एक सांप्रत परिदृष्य *ओमप्रकाश बोबडे*	367
१९६.	स्त्रीत्व के संबंध में बुद्ध के विचार *डॉ. सी. एस. जगताप*	368
१९७.	जागतिक शांतता और बुद्धिझम (बुद्धविचार, बौद्धमत) *प्रा. डॉ. नि.ल. बोरोडे*	370
१९८.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में बुध्द के सदाचरण सम्बधी विचार *प्रा. डॉ. दिनेश वा. निचित*	371

बौध्द दर्शन में 'विज्ञान' वाद

प्रा . डॉ. वेदप्रकाश ई. डोणगांवकर
तत्त्वज्ञान विभाग प्रमूख
मातोश्री शांताबाई गोटे महाविद्यालय, वाशीम

वेदो का प्रामाण्य अस्वीकार करनेवाले दर्शन नास्तिक दर्शन कहलाते है । बौध्द दर्शन भी वेदो का प्रामाण्य नही स्विकारता इसी कारण उसे नास्तिक दर्शन कहा गया है । साथ ही बौध्द दर्शन अणात्मवादी दर्शन भी है । अर्थात यह दर्शन आत्मा नामक किसी स्वतंत्र पदार्थ को नही मानता । इस दर्शन में 'मन' को स्विकारा गया है । 'विज्ञान, वेदना, संज्ञा और संस्कार के संघात को मन कहते है ' मन को चित्त, विज्ञान आदी शब्दो सें भी जाना गया है । इस दर्शन को विज्ञानवादी दर्शन भी कहा गया है । यहा यह प्रश्न उपस्थित होता है की, मन का विज्ञानवाद से क्या तात्पर्य है ? इस प्रश्न के संदर्भ में यहा विज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टीकोन तथा विज्ञानवाद इन सभी विषयो की चर्चा करना हमारा कर्तव्य बनता है ।

आजसे २५०० वर्ष पुर्व बौध्द दर्शन की स्थापना स्वत: गौतम ने की । उनके दर्शन मे चार आर्य सत्य, आष्टांग मार्ग, व्दादश निदान, अणात्मवाद, क्षणिकवाद, कारणसिध्दात प्रसिध्द है । गौतम बुध्द के पश्चात उनके विचारो का समर्थन करते हुये दो पंथ निर्माण हुये । जीसमें से हिनयान पंथ ने बुध्द के नैतिक विचारो को और महायान पंथ ने सामाजिक विचारो को प्रस्तूत करने का प्रयास किया । हिनयान पंथ से फिर वैभाषिक और सौत्रांतिक संप्रदााय निर्माण हुये । इस संप्रदायोने ज्ञानमीमांसा पर बल दिया था । तो महायान पंथ से भी योगाचार और माध्यमिक संप्रदायो का निर्माण हुआ । और इन संप्रदायोने 'सत्ता' संबंधी विचार प्रस्तूत किये ।

आम तौरपर 'ज्ञान के नियमबध्द संग्रह को विज्ञान (science) कहा जाता है ।' विज्ञान मे निरिक्षण, वर्गीकरण और विश्लेषण आदीको महत्व दिया जाता है । विज्ञान और शास्त्र समान शब्द है । बौध्द दर्शन के अभ्यास से प्रसिध्द विचारवंत ऱ्हिस डेव्हिडसने, 'विज्ञान' नामक संस्कार को 'मनके सर्वसाधारण संवेदना (जाणिव) का निदर्शक कहा है ।' अर्थात बौध्द दर्शन में 'विज्ञान' एक मनोवैज्ञानिक (मानसिक) अवस्था है । वह मन की एक कल्पना है ।

बौध्द दर्शन में विज्ञान का अर्थ स्पष्ट हो जाने पर वैज्ञानिक दृष्टीकोन क्या है ? यह देखना आवश्यक हो जाता है । इस दर्शन मे मन के संवेदना सें 'विज्ञान' शब्द को जोड दिया गया है । किंतू इसी दर्शन में जीस वैज्ञानिक दृष्टीकोन की हम बात करणे जा रहे है । वह यहा उल्लेखित 'विज्ञान' से जीतनी समानता रखता है । उतनी ही भीन्नता भी रखता है ।

वैभाषिक संप्रदाय में 'विज्ञान' की जो व्याख्या हुयी है । उससे सौत्रांतिक संप्रदाय सहमती रखता है । किंतू बाह्य पदार्थ का ज्ञान प्रत्यक्ष से नही अनुमानसे होता है । ऐसा इस संप्रदाय का मानना है । इसी कारण इस संप्रदाय को बाह्यानुमेयवाद कहा गया है । इस संप्रदाय के मतानुसार, प्रत्येक पदार्थ का अस्वितत्व क्षणिक है । इसी कारण प्रत्यक्ष के द्वारा ज्ञान प्राप्त करणा संभव नही है । अर्थात पदार्थ के कार्य का ज्ञान अनुमान से होता है । इस संप्रदाय का विचार 'विगमन' अनुमान को सुचित करता है ।

सौत्रांतिक संप्रदाय के नुसार पदार्थ का पहले 'विज्ञान' (मानसिक प्रक्रिया) होता है । फिर अनुमान होता है । और फिर प्रत्यक्ष होता है । अर्थात यह संप्रदाय बाह्य पदार्थ के ज्ञान के लिए प्रथमत: 'विज्ञान' को महत्त्व देते है । उसी 'विज्ञान' के आधार पर अनुमान करते है । और अनुमान से ही प्रत्यक्ष होता है । सौत्रांतिक संप्रदाय में आखरी मोड पे क्यो ना हो पर प्रत्यक्ष की बात की है । अर्थात निरिक्षण की बात की है । इस कारण यह संप्रदाय भी वास्तववादी (Realist) है । जहा तक Science की बात है तो बिना अनुमान प्रयोग और बिना प्रयोग के आधार पर प्रत्यक्ष ज्ञान संभव नही है । इसी कारण अनुमान को (बाह्य) महत्व देणेवाला सौत्रांतिक संप्रदाय भी पुरी तरह वैज्ञानिक दृष्टी रखणेवाला संप्रदाय है ।

इस तरह अब तक हमने science, 'विज्ञान' तथा वैज्ञानिक दृष्टीकोण की चर्चा की है । तब हमारे कर्तव्य के दृष्टीसे 'विज्ञानवाद' पर चर्चा करणा आवश्यक है ।

बौद्ध दर्शन में एक संप्रदाय ऐसा है जीसे 'विज्ञानवाद' के नाम से जाना जाता है । वास्तव में यह योगाचार संप्रदाय है । मैत्रेयनाथ, के बाद असंग और वसुबंधु इस संप्रदाय के प्रमुख प्रवर्तक रहे है । लंकावतार इस संप्रदाय का प्रमूख ग्रंथ है । यह विज्ञानवाद अर्थात योगाचार संप्रदाय शुरु मे बौध्द दर्शन के संबंधसे जीस 'विज्ञान' की बात की है उससे संबंधीत है । science से यह भिन्नता रखता है । scienec में निरिक्षण, वर्गीकरण और विश्लेषण को महत्त्व दिया जाता है । किंतू यह संप्रदाय निरिक्षण को कतई स्थान नही देता । अर्थात यह बाह्य प्रत्यक्षको, प्रत्यक्ष के आधारपर बाह्यजगत को नही स्विकारता।

'सर्व बुध्दिमय जगत्' यह योगाचार का प्रमूख सुत्र है । ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान इन त्रिपुटी में से यह संप्रदाय केवल ज्ञान को सत्य मानता है । इनके मतानुसार ज्ञानसे ही बाह्याजगत् उत्पन्न होता है । ज्ञान को सत्य मानते हुये, योगाचार आंतरिक जगत् की सत्ता को स्विकारते है । आंतरिक जगत् का तात्पर्य 'चित्त' से है । अर्थात ज्ञान के आधारपर चित्त बाह्य जगत् को प्रकाशित करता है । चित्त के संवेदणा (जाणिव) को सत्य मानने के कारण योगाचार संप्रदाय को चिद्वादी (Idealism) भी कह सकते है ।

संदर्भ :

१) प्रा. डॉ. ग.ना. जोशी – भारतीय तत्त्वज्ञानाचा बृहद् इतिहास खंड –(२), शुभदा–सारस्वत प्रकाशन, पूणे

२) श्रीनिवास दिक्षीत – भारतीय तत्त्वज्ञान, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर

३) पी.डी. चौधरी – भारतीय तत्त्वज्ञानाचा इतिहास, सोमकुवर प्रकाशन, वरुड

४) प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा – भारतीय दर्शन की रुपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, पुणे

५) डॉ. प्रदीप आगलावे – समाजशास्त्र, श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपुर

***